Part-I, Paper-I.

मांग की लोच की धारणा
"The Concept of Elasticity of Demand."

किसी वस्तु की मांग उस वस्तु की कीमत के साथ परिवर्तित होती है, किन्तु सभी स्थितियों में मांग के परिवर्तन की मात्रा एक समान नहीं होती। मांग का नियम यह नहीं बताता है कि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग में कितना परिवर्तन होगा, क्योंकि मांग का नियम केवल एक गुणात्मक कथन है। दूसरे शब्दों में, मांग का नियम कीमत परिवर्तन के कारण केवल मांग के परिवर्तन की दिशा को बताता है। मांग की लोच अर्थशास्त्रियों द्वारा मांग के नियम को परिमाणात्मक कथन के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि मांग की लोच किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के सापेक्ष उसकी मांग में परिवर्तित हुई मात्रा को बताती है जबकि अन्य बातें समान रहती हैं। इस प्रकार कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप मांग की प्रतिक्रियात्मकता को मांग की लोच

Scanned by CamScanner

कहा जाता है।

लोच का अभिप्राय है वस्तु में घटने या बढ़ने की प्रवृत्ति। उदाहरण के लिए, रबड़ लोचदार होती है क्योंकि दबाव पड़ने पर वह जाती है और दबाव हटा लेने पर पुनः अपनी स्थिति में वापस आ जाती है। लोच दो बातों पर निर्भर करती है – वस्तु के स्वभाव पर और उस पर पड़ने वाले दबाव पर। कुछ वस्तुओं का स्वभाव ऐसा होता है कि उन पर कम दबाव डालने पर भी अधिक परिवर्तन उत्पन्न होता है, ऐसी वस्तुओं को अधिक लचीली वस्तु कहा जाता है। इसके विपरीत, कुछ वस्तुएँ ऐसी भी होती हैं जिनमें अधिक दबाव डालने पर कम परिवर्तन होता है, ऐसी वस्तुओं को बेलोच वस्तु कहा जाता है। इसी विचारधारा से लाभ कीमत परिवर्तन एवं उसके कारण मांग की प्रतिक्रियात्मकता के आधार पर मांग की लोच की व्याख्या की गयी है।

Thank you

Scanned by CamScanner